





















## राय देवीप्रसाद 'पूर्ण'

बन्मतिथि मार्गशिषे छुट्ट १३ संबत् १९२५ वि०, बन्मस्थान बवरपुर । ये दिन्दी के उन नामी फवियों में थे जिनसे दिन्दी के रिट्ट पहुत सुछ अशा की का सफवी थी सेकिन ससमय में ही इनकी सुस्यु हो जाने से यह आशा फरवती न हो सकी।ये फानपुर के प्रसिद्ध वकीठ और विद्वान थे। ये फविदा प्रत्रभाषा में ही करते थे। इनको दिखों हुई पुस्तकों में बन्द्रफछा-भानु-कुमार, धाराधर-धावन नामक नाटक और मैचरूत का दिन्दी पया-तुवाद प्रसिद्ध है। ये ज'वी थेणों से कवि थे। इनकी कविदाओं का एक संप्रद 'पूर्णसंप्रद' से नाम से अभी हाल ही में प्रकाशित हुवा है।

#### बःवू भगवानदास एम० ए०

जन्म १२ जनदरो सन् १८६९ हैं , निवास-स्पान "विधाम" चुनार, निर्जापुर । जार दर्शन-द्याख के पूर्ण पण्डित, बङ्गरेजो सौर दिन्हों के ऊंचे लेगक हैं । भारतीय धर्मशास्त्र पर भी आप का पड़ा गम्मीर कादयन हैं । अपने क्षण किया दिन्हों में आपने कनेक प्रस्प लिये हैं । आपने क्षण किया हों में आपने को के प्रस्प लिये हैं । आपने क्षण किया हों हैं । हिन्दी से जापका पढ़ा सत्त्रय पर 'क्षोशास्त्र' में प्रकारित हुई हैं । हिन्दी से जापका पढ़ा सत्त्रय पर 'क्षोशास्त्र' में प्रकारित हुई हैं । हिन्दी से जापका पढ़ा सत्त्रय हैं । हिन्दी से जापका पढ़ा सत्त्रय हैं । हिन्दी सार मिलेंग मारतवर्ष में सी जापकों के विद्यान मारतवर्ष में सी-सार मिलेंग । जाप सम्मेटन के सल्कार वाले पकाइश प्रधिम्म में समापति हों सुई हों । सम्मेटन के हिन्दी-विद्याप'ड को संस्थापना पड़िले-पहल लापके हारा ही हुई हों । काशो का विद्याप'ड आपके हो परिधम और उद्योग का कल हैं ।

### पं नाधवपसाद निश्र

निवास स्थान कम्बन्स दिला चेहतक, जन्म संवत् १६२८ विकाचे 'सुवर्षात' के सम्मादक, हिन्दों के सक्छे लेखक, करि





, \* '

### चतुर्देदो एं० रामनारायण मिश्र वी.० ए०

जरम को० छ० ११ संवत् १६३१, जरम-स्थान मिर्झापुर।

मिश्रजो हिन्दी के पुराने टेख क और कवि हैं। साप प्रवासनदू,

माजोपुर, बाँदा, रटाचा, जानरा तथा जीनपुर में तहसीलद्वार के

पद पर रहकर आजकल प्रयान में रहते और सरकार से पेंदिन

पाते हैं। जापकी दिखी पुस्तकों में अवयोप (काव्य) शोकाधु,

स्वागत-समागत, पंचराज का महावर्षव, वसंत-पद्मक, विनय,

संगीत-सागर प्रकाशित दथा कामुक, प्रे को कदिवा, जोज की

योज अवकाशित हैं। भारतिनत्र, भारत-द्वाता, प्रयान-समाचार,

सुधानिधि, रायवेन्द्र, यादधेन्द्र, चतुर्वेदी, अन्युद्दय तथा मर्थादा में

आपके संक्त्रों साहित्यिक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। यदि

उनका संप्रद अच्छे दंग से किया जाय तो कई अच्छी पुस्तकें

तैयार हो सकतो हैं। चतुर्वेदोजो बड़े मुदुभायो, चिनोद-प्रिय,

साहित्य-रिक्त और सुकवि हैं। जाजकड आप हिन्दो-साहित्य
सम्मेलन के संयुक्त प्रान्तीय प्रचार-संयोजक हैं।

#### वं गारियर शर्मा "नवरत्न"

जन्म जेष्ठ शुरुष अस्टमों सं १६१८ वि , निवास-स्थान आसरायाटन (राज्ञपूताना)। नवरत्त हो बढ़े अब हैं। आप हिन्दों के सिवा संस्कृत और गुजरातों में भी कविता जिपते हैं। इन भाषाओं के अविरिक्त आपकों उद्दूर, मराठों, वंगला और प्राकृत का भी अब्छा जान है। जार के किये, अनुवादित तथा सम्वादित प्रत्यों की संख्या २० के लगमग है। इन्दों में मध्यभारत दिन्दों-साहित्य-समिति, आलरायाटन में राज्ञपूताना हिन्दों-साहित्य-समिति के संस्था पत वधा काय भरतपुर में हिन्दों-साहित्य-समिति के संस्था पत वधा काय भरतपुर में हिन्दों-साहित्य-समिति के संस्था पत वधा काय-संवालन में आप का मुख्य हाथ रहा है। अनेक विद्वत्समार्जों से आप को "नवरत" "महोपदेशक" तथा 'स्था-स्थान-मास्कर" की उपाधियों मिलो है। जाप हिन्दों के अच्छे

















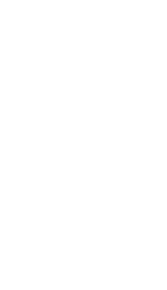












सहदय तथा मिष्टभाषी हैं। ये गुरुकुळ तथा हिन्दी-साहित्य-सम्मेळन बादि संस्थाओं में प्रतिष्ठा-पूर्ण पर्शे पर फार्च्य कर चुके हैं।

# पं॰ देवीदत्त शुक्ल

इनको अवस्था अव ३५ वर्ष के स्यामग होगी। ये साई'-खेड़ा, जिला उन्नाव के निवासो, शाउकल 'सरस्यतो' के सम्पादक हैं। ये 'किड्कर' नामसे कविता स्त्रिजते हैं और हिन्दी के एक अच्छे केषक हैं। बड़े सीधे-सादे, उत्साहो, मिलनसार और हिन्दों के पूर्ण पण्डित हैं।

# वाव् गोविन्ददास

जन्म चिजयादशमी सं० १६५३ विकम, जन्मस्थान जयलपुर। बावू साहब हिन्दी के प्रविभाशाली कवि, लेवक और वक्ता है। आपको अडुरेज़ो, वंगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं का अच्छा द्वान है। १२ वर्ष की अवस्था से आपको हिन्दी से अनुराग है, और १५ वर्ष की ही अवस्था में आपने चम्पावती. सोमस्ता और ऋष्णलता नामक उपन्यास दिसे थे। इसके अविरिक्त जापने सुरेन्द्र-सुन्दरी, रूप्णकामिनी, होनहार और व्यर्धसन्देह उपन्यास, घाणासुर-परामव नामक मधाकाव्य, विश्व-वेम एक मौद्यिक नाटक तया तीर्चयात्रा सम्बन्धो दो प्रंथ और छिखे हैं। ये सब अमकाशित हैं। राष्ट्रीय-हिन्दी-मन्दिर के मुख्य संस्थापक जाप हो हैं, क्योंकि उसके सञ्चादन के लिये आपने १००००। दिये थे। शारदा-पुस्तकमाला आप हो को सहायता का सुकल है। आप स्वभावके वहें सौम्य और उदार हैं। हिन्दो-साहित्य की स्थायी सेवा करने का आप में सदम्य उत्साह है। आप तृतीय मध्यप्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति हो चुके हैं। विद्या, धन, साहित्यानुराग हर्ग मुज्या के स्वाप्त कर्मा कर् 155 1 gibin im iben nur fieb bi beit.

trate abenge aus &1 fert-afent n g africa tiete nie eau auf ger 11 de fege A ciura gut el upet uitgi a tank tit teo to and till will - A per pepepentily its

27

tifere it nute ign aufenn medent fit pahit for gut & 1 mit mit fint alleite all miles Line extended at cent , extins १३६ स्ट्रांग्ड्रीस किया बारका महिदाद्य दूर। go sin easte impm itre am infire in geng mura fing it det um ,eineid, व्याद बनाय हो यह है। मुद्रिक्षण में वहुंबा ात द्वियो है है बहुक है है है महिनार्थस स्ट्रह में बैंड अविदय गीवस्थ्य भिनादा

क इस्ताप्तमा साथ है 'लिकिड़गेड केम हा स

ज्य न्तुरम स्वयं के बटकता है। जाए यहें सरह, ह रविक, मावक और एक कच्छे होनहार कवि हैं। पंडेव बेचन रुम्मी ((<sub>टम्</sub>) निका बन्त-स्थान बिला निर्वापुर में, मागीरधी सीर ब मामक हो महिचों के होनाचे के होव में रिन्ध्य-पूर्व मावा टिइरोंचे वटा 'जुनार' नामक एक छोटा वा ऐतिहातिक कर है। ये एक प्रतिमासालो लेखक, कृति, क्यांबी-लेखक, बाटकस मीर बनाहोबह है। तुर दिखते हैं भीर बस्ता दिखते हैं प्रति भवास्ता (साण बातक एक बहुत जिन्दर नाटक डिया है। इसके अतिहित्त इन्होंने "बन्द देखीनों के सन्तर ने नामक वा स्वयं नामान करण है। यहारी बारक तो स्थान करके विश्व है। ये बड़े विनीद-विन, वाहित्य-शतिक वीर नस्त्रीत है। ् हो अवस्या रख समय २८ वर्ष के ट्यानय है। देहित बाहरूर रान्धी (निहान) वन्त्र कामा १६८६ विन्, वन्त्र स्याव वर्ण्येन । वार बायका मात्राव ( बामपुर ) दे सम्माद्द है। बाव रहे मानु ह हरि वदा हरामान्त्रेयक है। हर् दर दह मार समा के सम्बद्ध रह से हें हैं। स्थित हैंसे दीस से से तह जार जार जार जार ज रहे है। बाद सारब चार तहा से है। बादबे हस्त में सके रहे वंत्र हा बहुत्व सहस्त्र है। बहुत्वी स्वतास्त्र में सक्तेय क्या-धीरती तुच्याहरूची चीदान 🛩 बन्द धारव गुरुव ५ छं । १६११ छो नताव में हुना । यहां कारमंदर वस्त्र स्टूब में दिला मन की वस्त्र रहता में हा निगढ़ वंदर्भ निगतों सहर बस्त्य ति वंदर्भ प्राप्त प्र े रहा में वे किय हुना विवस्त से प्राप्त में नहा







( 88 )

बाबू भगवतीचरम दमी दी० ए०

जन्म संस्त् १६६० वि., जन्म-भूमि धन्तोपुर ( दलाव ), निवासस्यान इरहवां, कानपुर। माजब्द इटाहाबाइ-यूनि-बित्तदों में पत्रः पर ज़ात्नठ कटास में दिन्दी पड़ रहे हैं। ये बुत छोटो मबस्या से ही बविता दिवने टमे थे। इनको किता में मानव-स्टिका मन्तर्जन्द मीर बहिज्ञन्द दोनों रहता है। ये बह्ने मानुक दिन हैं। इन्होंने 'केही' तथा 'नाविक' नामक काव्य तथा 'पतन' नामक उपन्यास डिया है। ये हिन्होंके बड़े उन्हें इरज़ेके कवि भीर टोकक होंगे।

श्रीनती महादेवी वसी

ये प्रवान से कास्पवेट नस्तं हाई स्कृड में पड़ती हैं। यद्यति इन्होंने मनो बहुत घोड़ो रचनारं हिया हैं, पर जो कुछ दिखी है वे वास्टव में बहुत सुन्दर हुई हैं।





## विषय-सूची

ष्टियंग	देवक			åc
ईदस-प्राधना जा	ादि			
१ प्रदोधिनो-भारते	न्दु बाबू हिस्स्वन्द्रः		•••	8
२ होन निहोस-धी	चुन एं० ष्टामताबस	तइ गुरु	•••	4
३ दन्देवा—धोयुन	<b>८० रामचरित बपा</b>	ज्या <del>य</del>	***	V
· ४ बन्देपम —श्रोतुत	। पं॰ रामगरेश त्रिप	ाठी	•••	5
५ सिशुक्त का दान~	-धोयुन बाबू पदुम	हाल-पुन्ना	हान्ड	
		दस्दी, बो०	Ųο	₹ 0
<b>६ समर्थेन—धोगान</b>		•••	• - •	11
७ पद्-धी वियोगी		•••	•••	११
= माया—धीयुन प	<ul> <li>गपात्रसाद शास्त्र</li> </ul>			
	_	<b>-ध</b> ह	₹"	<b>१</b> =
६ देपायही – धेयु	त शिवदास गुन 'ह	इनुम"	•••	13
१० बतुरोध-धायुन			,,	23
११ मन को भारता-	-धोयुत ५० देवादस	। शुद्ध		3 :
इष्टवन्दना आि				
१२ सहनी-पूत्रा—धी				3 =
१३ ब्रजमापः, शिद्रो,	, प्रापंता—धंयुत्र ५	ं• स्यावस	<b>7</b>	
,		संस	Ź.	3,2
१४ हे कविते - धाँयु	त ५० महाचीरवस्तः	रिविदेशे ।		7,5
. १४ गंगा-बीख-ध	। बाबू ज्यान्तादहाह	TEX.	Ćs ₹s	₹.
१६ बतुन-बत-धो				
	₹ <b>₹</b> \$ ₹\$	, Topog é	·z	43



	_		
	<b>फ</b> चिता	<b>देव</b> रु	युष्ठ
₹\$	निदाघो मध्याद्य-ध्रोयुत पं॰	लोचनप्रसाद् पाण्डेय	ર્ફ
<b>३</b> २	वर्षा-वर्णन-धोयुत पं० जग	न्नायप्रसाद् चतुर्वेदो	
	-	पम् । आरः पः पसः	4=
ų,	कृति-छटा		•
33	मयंक-महिमाधीयुत पं० व	दिरीनारायण चौधरी	
	~	"प्रेमघन"	६२
₹8	चन्द्रोदय –धोयुत पं॰ किशो	रोडाड गोस्वामी .	ŧŧ
34	चमेळी-धाँयुत पं० मन्तन	हिवेदी, गडपुरी .	<b>ξ</b> ξ
34	चन्द्रिका-धा वावू मगवर		
		पल्॰ पल्॰ यो॰	€ 9
રેહ	चौँद्नो—धो छाळा भगवान	'दोन 'दोन' .	ĘĘ
३८	सामन्त्रण—धोयुत पं० राम	बन्द्र शुक्त	{٤
3\$	भानु-धोयुत गुरुमक् सिंह '	मक्त' बी॰ ए॰,	
		पल्० पल्० घो०	40
80	कूल-श्रीयुत एं० गुढाबार	ल बाजपेयो "गुउाव"	૭૪
F	वेश्व छवि		
88	बम्बई का समुद्र-वट-धो	वेठ फन्हेंपालाल पोहार	69
પ્રર			ug
ধই			9%
88	विश्व-सङ्गीत—धीयुत पं०	भगवानदीन पाठक,	
			ى، نى
४४	· वित्रवन—श्रेषुत विद्याभूष	ण 'विभु'	48
Ę	<b>इद्गार</b>		
	्रत्यावळी—श्रोयुत पं० साद	विलास समर्वेही	
٠.	3	"यक भारतीय बातमा	" <b>८</b> २
٠.	. aametra da nea	775 CHUMMAN 41/41	G.



		• • •		
ŗ	कविता	<i>देवफ</i>		SB
ć	स्वदेश-प्रेम	<b>जा</b> दि		
٤	( <b>३</b> कुटोरका पु	ष्य-धोयुत बाबू पुरुषोत्तमदास टण्ड	न	
:	,	एम० ए०, पर्व-पर्व०	बी०	\$18
	८ मातृभूमि-	-बाबू मैधिलोशस्य गुप्त		११४
1	६ जन्मभमि-	वेम- धीमान याव गोविन्दशस	•••	१२०
٠,	३० प्यारा हिन	दुस्तान - धोयुत एं० हरिशद्भुर शामां		
		"कवि	<b>रहा</b> "	<b>१२३</b>
١	<b>१ भारतमाता</b>	को स्मृति—धो॰ यावू द्वारिकायसाइ	गुप्त	• • •
		<sup>1</sup> 'रसिवे	جع''	१२४
١	ऽ२ जनाच१	शेघुत घोरसिंद पपिक		१२५
		ति—धोयुत पं० सजाराम शुक्त	•••	१२६
,	इ8 स्यईश∙ष्रः	म - धोयुत जगमोदन "विकसित"		१२७
1	५५ मातृभाषा	—धीमती सुमद्राक्षमारी देवी चीहान	·	१२८
	५६ द्वय स्पद्धे	त—धीमती तोरनदेषी शुक्र 'द्रती'-		१३०
	विविध वि	पय		••
		गती—धोयुत पं॰ माध्यप्रसाद मिध	,	१३१
		सप्तक –धी सैयुद्द अमोर अञ्जी 'मीर'		123
	३६ व्यक्त प्रे	म धोयुत चतुर्वेदी पं॰ रामनारायण	মি শ	
			o Qo	१३५
	-	तार श्रोयुत प∘ माधव शुक्क	•••	<b>१३</b> ६
		धीमान ठाकुर गोपालशरण सिंह		139
		धीयुत सुमित्रामन्दम् पन्त 🕠 🥏		355
	.३ सोस्- ध	ायुत मोहनलाल महनो गयावाल		181



# नवीन पद्य-संग्रह

# ईश्वर-प्रार्थना आदि

## प्रवोधिनी <sub>जागो संगटक्य</sub>, सहुत व्रद्धसन्दश्वारे।

जागी संदानंद-करन, जसुदा के वारे।।
जागी यहदेवातुज, रोहिनि मात-दुलारे।
जागी धोराधान् के प्राप्तन ते प्यारे॥
जागो धोरात लोकर सुक्तर, मान-मान-पदितकरन।
जागो गोपी-गोप-प्रिय, मक-सुक्तद असल-स्वरन ॥
होन चढत वब प्रात, चढ्यास्तिन सुख पायो।
उद्गे विदंग तिज्ञ वास विरेदन शेर मचाया॥
मय सुद्धलित उरचडक प्राय ले ग्रांत सुद्धायो।
मन्यर गति व्यति पीन करत पंतुरण यन धायो॥
कहिका उपवत विद्यत लगो, भेयर चडि संचार करि।
पूरव पंत्राम दिसन महं, स्वर नरन एक देव तेजपरि॥
द्वाप प्रचान दिसन महं, स्वर नरन एक देव तेजपरि॥
द्वाप प्रचान दार इस्तर सुद्ध सुद्ध सुद्धायन।
भार मानिन दुरग इस्तुर सुद्ध सुद्ध सुद्धायन

2€ €

० मोल कमल



47 र्धायत्यार्थना बाहि ] हुश्व साख, नाप! पेति जावो, सब जावो। बाठत-रूव पदि दहर हेत चहुं दिवि सो टागो॥ न्डान्ड्डा पायु बङ्गवत वैदि अनुरामो । हराङ्गीय को वृद्धि युक्तानडु साळत त्रागी ॥ बदुनो करनायो बानि के बस्दु हरा निस्वरायस्त । बाचो बिंड देगदि नाम बन बैंद्र दीन दिन्द्रन स्टब्स ब मधन मान, धर, बुन्ति, जुनाल बल, देह बहायो । क्षत्र स्रों विषय-विदृष्टित जब करि विनिद्धि पटायो व मादस में पुनि कांति क्रहर देश बहायो। ताहों के निस जबन बाजसम को पग नायों व जिनके कर की कायाज हज, बाज-पूज सह नाविके। मब क्षोगहु होर अधेत तुन, होबन के एक फ्रांकिके त बह यमे हिरून, मोड, एन. बहि, बर्च, मुसिन्तिर! बन्तपुत, बायस्य बदां शहें हरिके विर! षद छत्रों सब मरे-प्ररे कृति गरे किने गिर। पर राजा को तीर साज केंद्रि जनत है बिर !! इसं संब, धक बार रासी पूर्व पूर दिखात दता! कारों पह भी वत-इत-इतक रहाडू बरको भारता । का क्षितः सम्बद्धः स्पन्न हे कस्त नेत समितिह कांत्र मा हे ने यह करें। एक बह के कर गण्य के विश्व के बहुत स्वरूप the second at his high बालक सब है रहे हैं देखा जह की करते .



गुन, दिया, घन, बल, मान बहु सबे प्रजा मिटिकी टर्डे । जय राज राज महाराजकी, ज़ानन्द सीं सब हो कहें ॥

—भारतन्दु इरिरचन्द्र

## दीन-नि होरा

#### ( )

द्या द्यामव नाप खदा है व्यक्ति तुम्हारो । को तुमने सुधि कमो दोन को नहीं बिलारो ॥ कौतुक जग में कर तुम्हारो करणा नामा । धन, मनुना, बळ, पुंच मार्थ है निसा दहाना ॥

#### ( ₹ )

को बोड़ी को दुधी हैन से सेवस्ति है। सहसा क्यान मेद! उसीके पर परसे हैं! मामदार को पंसा कटिन सेवी के इस में। कोय-रान तुम नाम उसे देते हो दस में!

2 1

खुडे हीर को कही होता में वां मत्ता है। दिल्ल पाम में पटी जात सुखर्भ करता है। सारु होता को साहा काप तुम हो हो उसमें विद्यालयों है जुल होता के कहका मसमे ह



## कन्हैया !

जब होता था उत्त धर्म का तब तम जाते रहे करदेया ! बाबी, यस्ते इच को पाठा दय ठढ दम दुःव सहे कर्दया । जो मारा तेत होहा-स्पन्न सब का था सिरताज कारीया ! वहीं बचोत्तव हो येता है गड़ा उटाउ में भाउ कार्रेया। वास रहे है ब्रिक सुराजा किर यहा का वान कर्मया। कर हे सुचह हाति के हाता दिव्य गांत का यान कार्रेश। मुखी मारत तहन रहा है। बर्ध बंधीने कर बन्धीय । बाद बारियों यहाँ यहा है बड़ी हुठेंचे बीट बार देश है रवशरह क्रियान हमा है मन्द मेंस के महारा करिया। सारह आबा हुने बहारा चारनवंत के हंख फारेंग! क्रियासर ने दृह था है मह मनित सा देश कहिया ! वब की भारत हते भी हवा भी मिद्र ना चौहर देख काईसा ! बची प्य रे प्रतिष्ठव हुए हो । हो याओं बहु हुव बहरेश ! ध्येत्र हार हा दिन हरने वे वडाते वा एक व्यर्देश ? रस्य हार वे परेय जैन से दिया देश का बात करीया। द्यावत तुम्रे म इक्का, स्त्री स्वती रख स्त्रीच : पुत्र का बेदा एक रहा है स्वाय किन्तु है द व बहुद्दा बच्चर ६४ वर रक्ष व इत हिला रही। बाद कार्रेक संभागात हो । इ. १६० १९६६ चर्या हुए। इ.हेफ बुक्रवे अपूरा पहेर वृक्ष हुन्द्र पुत्र कर्नुल बहा बता है बादा कि कि हुंदा का हात कहेंच कात बकातुम विरुव का है। ये यादा यादा व कहीर



हॉस्बंद मौर भ्रुय ने इक्क मौर हो बताया। में तो समन्द्र रहा था। तेरा प्रवाय धन में व तेथ पत्रा सिकन्दर को में समन्द्र रहा था।

पर तृ बसा हुमा या प्रदाद कोट्कन में।। कोसस को हाथ में या करता निनोद तुरी। तृ हो विदेस रहा या महन्द के दहन में 2

पूरानाय प्राप्त का मध्यूर के पह प्रहृत्यह जावता पा तेल हुई। क्रिकाम १ तुरी प्रचल प्राप्ता प्रतृत की रहन में १

काश्वर बनक पड़ाया गांधी की हरियों में। में ही सनक रहाया सुरएक्टीड-उन में 4

हैसे दुते दिन्पा अब भेर एवं धर्र है। हैसब होडे भगरन अन्याद्वी में हरन में।।

तृह्य है व्हिप्त में, कीन्द्र है सुमन में।

त्याय है परन में, विस्तार है गतन में ॥ तृ बान पिन्डुमों में, पंतान मुस्तिमों में । विरागत विश्वपन में तु सत्प है सुजन में इ

हे दोनहरुषु येलां यक्षिण यहान करतु । देखुतुते हुणी में सन में, तथा दबन में ३ करिनायों एका का रोज्यास हो सुदछ है

हुनको समय कर तुक्त करण सहक से १ इस मिक हर मानु सुख में तुन कर्णु पेला समय सार्ट मेरे समय कन से १

- : = ... 35.

and service entr-1.35 kit in the in 10 m tit in rijb fe alan ninee qig 23 il tanin mala, Cia jeil an een ibe g fan E, autre : देश से हैं। स बदी बहुता जैनहा बाब विस्तरा है e sige iffe traf to bre tee sad bip tag है क्रिक्ट द्रव है किया का किया व्यवस्था है हो। eieet weit de Ady jein nig migene : हार्य सुराता के तप्युद्ध से दूषा मधी चया तीय है frin is nu fam if tit ibr tor fig ir am शतकारता ब्यूने से मेरे मन को आभा इच्छ l nwer is fingit der yn meit ge armie! मेरे जान दिया, येखा है । छत् तुः हारे विन। नुव यह दो दो स्वर्ग वृद्धि हो हो है जोही ्रभारत देवर वे करता है। ओक्स का नियोह, बया में युग्हें बाव, दे राकता कुछ भी किसी प्रकार है मुन्स में हुद भार मीगते हो मिशा का प्रति भिन्दी तना, तुर्दात दूर देशकर विश्वित हैं कलार। स्थाप वर्षा हे हैं से शास का इत्राध । तुन्द्र छान्द्र सर्वादा का द्र द्राव्य मा अदी विवाद ह वह सेसी विधित क्रीया है, वह संसा स्वयंदार । मध्युक का दाव

### समर्पेन

पृष्ठ हिया, यो तुनने शतको हा रिजड़े में कर किया!
वात र्जुयने को सेवारा,
दूर-एर किर्जानारा मारा!
दूर-यात कैश बाता है, बादा! क्या बानन्द दिया!
वर-कोटर-याति निर्देश को, स्वर्यातन बातन्द दिया!
दर-कोटर-याति निर्देश को, स्वर्यातन बातन्द दिया!
दर-कोटर-याति निर्देश को सुजन बनाया,
वर्यात्वेत करना तिब्रहाया।
राज-वान का महा व्यापा, सनर किया, स्वापीन किया!
—एपक्षमा १७

#### 43

बेरेंट्र को मरहत करि राजे । कोरन घर तो तुन्हें को विदिध विषयों मध्य सुनाजे । या उर-व्यवस मान्युची श्रीव दक्त-वेरेड्रे (दक्कि ) भार सक साथ बात सुरु, गाँव नाय । तुन्हे रोक्राफ । मह दक्षार दर पहुम तुन्हर बळांक वर्णक दांव वाळ । नाय ताय स्थान के नेत्रात विद्या कर्मने विराह पुष्ट तुन्हर स्थान है नेत्रात विद्या क्षा वर्गने विराह सहय दक्षार दुन का क्षांत्र कर में प्रदेश हमाजे । व्यक्ति विद्याल वात नरमायर । उनके दस्ति उर व्यक्ति क्षांत्र वात नरमाजे ॥



#### दीपावली

बहो में रोधे होप उद्यार्ज ! बेसे बहु परा आसोहित होरावटी मनाड है आड विश्वके घर में देखी कितना है आलोक। और इमारे परका दोवब बुन्हा हुया, हा शोक। दृश्य को किस प्रकार समनाजे ॥ १ ॥ रस भैरदी बमा रश्नी में जाड़े विवर्त हार १ हिन प्रस्का विभागत विचास सोवा है संलाह ह स्वाको भैते हेड् अग्रज्ञ रे ॥ २ ॥ जान शरिकतावेची बचना चीव दिया है हाथ। बरी होसता कोई हाता कीए हिन्तु बाव! मन व देश की से डाइ ! १३३ मोलो मेरी शेरणकाचा चीत् में महरूर। इपादान कारण काजा का स्टेट्योप से इस्त ध्यस्य दिस सीति हराइ'!। बरा दें बंधे क्षा क्षाप्त १ १३६

बनुगाव

दर्भ राभियाम् हुत्य ४ त्या विद्या २०२० संभवाहुत्य राष्ट्रा हृत्य हृत्या स्ट्राल् १८ रा १८ ११ व्हार्ड स्ट्राल्य हृत्या हृत्या



क्षेत्र स्त्र हो सहसुक्तात हरियों से हे पारे: बाह्य है कहन सिन्दा है बहुड कहारे। बिह्य क्षात ने पहिल्लेड सेस्टस्टार कहा। बिह्य स्त्र का कीर केस्टास्टा करों ने हहा।

ट्रं कर बे.स. स्य है, में हंग्रे हैं. स्यों भिन्ने हुत्र सेबें:

—संतिकार विद्यानक्षेत्रीय

स्य क्षेत्रास्य शृक्ष केला स्टब्स्

बही काम का विशे की है कि निवास का स्वास । बाही काम कि काम कर कि में कि माहित का कि माहित का कि कि का कि माहित का का कर है के माहित का माहित का माहित का कि माहित का माहित का माहित का माहित का माहित का कि माहित का माहित का



वह दहं बुद्धि विषय साव इहं शत न वेचे। उहाँ न दोपक दरें रई देहि मांति उद्येगे॥ यह बुद्धिमान हन छुना दिन, बुद्धि खोप मारे फिर। देवे मुख कव टाइटे, दुस्टिइर दिनको करें। उपन्वय, श्रीरण, होस, यह तुव दिन बहु नाहीं। स्वारच परमारच स्वरो देरे हो महीं॥ बढ़ीन घरको काज न दित्न बढदेवनको। उनम हेत तर हरा दिना ना-रख सेवनको ॥ उप उपति महिल ब्रह्मांड के जीवन को लाधार जो। उप उपनि रहनो उगर धी पदमात्र सुच-सार जो 1 मझे दियों से मात बाप कीन्हों पनि फेसे। तुम्हरे बावे हमरे घर ध्ये मिठ्यो अंधेरी 1 टस्टरे कारत बाज बात दीवार्ज वारी। घर संघरी, ट्रांन्यों ६४ वस्तु सँदारे 1 तुरुरे बावे तुव हुतन हो, आज वहन्द बवार है। सब कुछे-कुछे किरव हैं। वरको नाहिं सरहार है।। नाउ बास्ने बहुएटन को इसा विहासे। विक्र मासून मोब रह्य द्वा बादा सारी । दाहिन वै एरे उद्देव प्रतादा का किन्हें घर। सार्वके व्यक्ति का इस इस उपान उस इस उ ास अन्तर पायके अहा ३ जन इसर प्रया चित्र चित्र भवत साह्य साला संहम यादत है वस राजाच अस दिशेष अदे सका दर माहा क्ष्यर तब का यात्र रुद्धि हमारे इर मारी।



जिपादना नाहि ]

वार्यना ह्मवि, पण्डिन, परिजन, प्रकृति, छात्र, रतिहरू, रिक्सनार । राजा मजा सुनेस्वश करि दिन्दी को प्यार॥२॥ हिन्दो-हिन्दुस्तान को मापा विरा₹ विरा**छ।** जनम देव सब सों कहें "मां ! मां दा ! दा" बाल ॥२॥ घर को जीघट घाट को, खेंत केत समसान। हाट-बाट द्रश्वार की मापा ये हो जान ॥१०॥ ित्तस्य शोघ वर्ने व्हन बहिन मातु सूप वान । वाही के उदार दिव पत रची समदान ॥१६॥ बाते बो कुछ यन सके मावापद अरविन्द् । भक्ति-भाव से पूजिये, खाँ सहा सातन्द ॥१२ ॥ —रामचरच गोस्वामा

हैं किति ! हुएस्पठं ग्ल-सहिग्डिजे, विविज्ञणांमस्य कहाँ गई ? ब्हिं स्वां कि कान-विधापिनों नहां, क्वोन्ट्रं कान्ते ; क्विते ; अबे कहाँ। हाँ मनो हा । मना अता गा। कहा छटा क्षण हुई नहें नहें। हो न नेंगं कान पना की, पना नुहीं ते किस छोक का गई ! नहीं हैं अनान्तरात है कहा गा है तब स्मठिएता हुई अपा कि कालिहास के सारा के तो मिलतों स्वरूप ही कहा का मजभूनि सहु हो, हुई महोसे स्वरूप के हिना हो ॥



सुजान है दूंद रहे जहाँ तहाँ, परन्तु तू काव्य-कछे वहां कहाँ ? बना सक्ते आञ्चति भी फसी यदि, वृवा परिधान्त तथापि सर्वेषा । बतारप, बीव-विहीन देह से, सबीव की सुन्दरि क्या समानता ! विचार ऐसे जगदम्ब है जहां, न दशंतों का तब सासरा वहां। बजेप रच्छा उस रंघ को उसे, दिनष्ट कोई सकता नहीं कर 🛭 विद्यम्बना जो यह हो रही दन, समृत हो भूत उसे ह्यामपि। पघारने को समिलाय हो यदि, न मा सभी वद्यपि है भनोहरे 🏾 बसो मिठेगा ब्रद्ध-मण्डलान्त का, ब्रयुक्त मापामप वस्त्र एक हो। श्रीर-छङ्गो करके उसे सदा, विराग होगा तुन्ककी अवश्य हो ॥ इसीहिये हो भवभूति भाविते, जर्मा यहाँ हे फविते न द्या, न द्या। बता नहीं कीन इन्होंन कामिनों, सदा बहेंगों पट एक ही वहीं ? सुरस्यता ही कमनीय कान्ति हैं, मनुहर वातमा रस है मनोहरे। श्रीर तेरा सब शब्दमात्र है, निवान्त निष्वर्ष पही, यही, यही॥ हवा दिन्हें द्वात स्डस्य दे यह, यही यसीभूत तुझे व्हरेंसे । विकस्य सेवा सदिकस्य सेवा, द्या उन्हों पै तब देवि होगो॥

कुछ समय गये पे योग्यता जो दिखाये, सदय-हदय दोके तु बजी के यहाँ जा।

न उदित बरहा का तित्व स्वच्छन्द्रशास,

वत विषेष कई क्या है महामीद दावि !

—नइ.बीरप्रसाद द्विवेदी

गंगा-गौरव

8

विधि दरदावर को सुष्टत-समृद्धि वृद्धिः सभु सुर नायक का श्रिद्ध को सुनाका है





गंग वह शक्त वर्ग वेंग तका है। जय-भव मार्ग हम-धोम जिर्दारत को 

। हे होते हाराड कार होहरी होहान आय अमराज स्त्रे तुकाहे जमहुत सुनी, मूरति मगोरप के पुग्व को पताबा है।। सगर-कुमारत के हारत की होतो सुध,ंक्

खातुं बद्यात् क्यु सेंदात्रं है, ब बातु हात' 1 f Blpr fatt fa muh a wurn क्षांत की मण्डली उम्राह्म भीव मोदिक,

गण बंधु धरेव वड़ी सामने व्यति है। क्षा कर हम सी ब्रमेस होड भू भी तक, हिन हुं वे छेम एवं धांतरे धहि है।

,क ब्रोफ शिक स्पूरको स्ट्रोड *छ द*ही । कि इत्राप्त द्वास किया देख कही सक उद्देश स्ट्राप्त को वात्र-प्रभाव वृद्धि, ( E )

120 क्रमप्रकृत सामग्री समाप्त सोत्र सङ्ग भूत होट उर्क कर को उन हैं। क्षे जार सदस्य सर्वात सर्वात है।

क्षेत्र संग्र एम संभाग रे रही होते संग्र

। के फकर अन्न हर शेर्ड़ और शेर्ड



acie diegil fie diesen (2018) acie 1 fi ficial dies acie (2018 acie) ciè diese directit sepil diese acie diese silectit sepil diese acie diese die acie die est acie (1 fi est fine die acie diese diese die acie diese diese die fine die acie die acie diese diese diese diese diese diese die diese diese

to's fine hime has here him in the fine him in the fine him in the state of the him in the state of the state of the him in the him

### म्हारा-ग्रहाफ

बाह्न सह स्ट हो स्टान्स्य । ब्रीयम् स्टान्स्य स्टान्स्य स्टान्स्य । स्टार्ट्स्य स्टान्स्य स्टान्स्य स्टान्स्य

hinds and evil entre reserved of the part of the part





















## **वै**।राणिक

### मद्न-दहन

#### ( t )

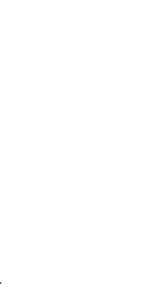
बिर्धि जासु जारण्य रितृहर मह दुरि माध्यो । जार स्ट्रिंग कर देनु जादितन हरता साव्यो ॥ विद्वि विद्विद्वि वर्षि मानवन सादत दुनि भासो । दृष्ट्रियदित दिन माहि कात्र को विद्वि विवासो ॥ वित्र दोनदृष्ट पति द्वार जह, भरे पान सेवेश जा । जीव द्वार पति द्वार जह, भरे पान सेवेश जा ।

## ( < )

कालन प्रति वह कहन का तु थाता सरसामन । प्रदू प्रदू हर योगि श्यात व्याह्य विद्यालन प्र यह प्रदू वर्षाणीर प्रत्य प्रिय स्माप्त करें। संस्कृति विविध्यानुष्य की न्यारी न्यारी प्र स्ने स्माप्ति विविध्यानुष्य क्ष्या श्राप्त कर स्वर्णाः। सन सम्बोधि विविध्यानुष्य विविध्यानुष्य क्ष्याः।

#### (1)

क्यु सामानुष्ठ हुन्य अविद्योतस्य स्ट्रिट्यु बुदेव । १९१६ स्ट्रीत प्रतास स्वत्यानाः १८८ स्ट्रिट्यु इ बरत्यु दृश्यात् स्ट्रीट स्ट्रिट्यु स्ट्रीट्यु स्ट्रीट बर्ग्युटेट स्ट्रीट स्ट्रिट्युटेस्टर स्ट्रीट्यु स्ट्रीट



ब ए समा कुञ्चित किये दिन्छन पांत्र फन्ध अकाय। बद पाम परकृदि सप्र विद्यस्त दृदिय नेन द्वाय ॥ (८) निज वपस्या निरक्षि चाधित कोष करि विप्रारि। भवे विकट स्वरूप, जो नहिं नेक जात निहारि॥ भंग धरि अहटोन दोन्हों तक्षेप नैन उधारे। कदो जासो उदादमाल प्रचण्ड सनि मयहारि॥ +छम र हे प्रमु छम्ह पोप प्रसास, विस्वन पाछ। होय ह्योम प्रयुच की टानि देव-चेर विहाछ॥ धास प्रथमित प्रहार पार्यन एउटाइ पर्याची दवार । वियो मार्गंड छारवंड अवि मरो तेज करात ॥ ( १० ) अति अशहरअनित योगिति सकत्र रोधन्हार। कत्वतास भ्रहाय, र्रात पर मोह 🕆 क्रिय स्वकार 🗈 वर्षाहर हेडि दियव-विद्यहि विद्यित सम भारताय। गण्य छड में गुम हरशीनमहत्रीय दिहाय ॥ ् (१६) या विकासीय स्रोतना है सप्रसीत सहजा। महं विशान्यवर्गाद खादि, सब मति क्यि महाब 🛚 ् १२ ' स्कारपात रह द्वेव रह ब्रेविट रास्टो। व्यक्तिवादिक देशकाय देशि विश्व कांत्र दनाहे । दे जिन दे उद एक श्रांति श्रामा बाउ श्रासे। तब एउ पूंछ इसय कहि बड़ि स्टिट स्थिती

्र स्त्रोत प्रमान क्षेत्र होता व्याप क्ष्यां हिन वच्याय विजयता होता। विवेश स्थायता स्वाप्त स्वाप्ति स्वाप्ति वच्या होता होता।

हर्भ छाड्डिमानड— हम् शाइटाइर्केस्ट्र

# អាខាមកែម៉ាកែ

and the property of the most affect with र क्रम से के बाब मात्र मात्र मात्र मात्र क्रम me die der geer iches ga liegerich abeier quiere fen fom frag imierre, erer minim beitem fein fiele fint alein feite for impele fænn tres feires er feirar bim र प्रत्ये क्षेत्र कर्मक हो क्षेत्र कर्मक व्यव होता होता है त्यातक बरका ना ब्याद मरामा, बाने बरहुना जिनारानो । tithing he g erf the expers bes trains तिकारण काम उर्दे दूर दूर सब धरावले। Leel annt unnenn nife uem ure ge foured & i feiwon gm meg mer blin nnnnen blin bife barb chorn go in continge four on eals ton ifemen extare sie fein trang turten bip बाक तुरकार वसपट शेके नहीं सरत पायत पानि lfeiten mi fegt fin flen fit treit mad un





दौराज्ञिक ]

माते हो हा-हितुष नट है या ब भी शांव बाहा। क्यें क्षेत्रीन जर उन्हें थेंड क्षेत्रे होवता है। प्यारे होते मुद्दिन जितने कौतुकों से सहा थे। धे बाँदों में विषय दब है दर्शकों के दमाते॥ दशार काला रुक्ति बदबों को बड़े बाद से या। कार्व कार्व पुरुष पहुंचा बाट्या कुरुआ था। ये शर्ते दे साल बड़को देखते पाइ पाली। हो याता है मधुखर और लिग्य भी इत्यकारी 🛚 ता! हो दंदी हरतस्य से दिस्य की मोहती की । स्रो आहे में महिनदन भी मुद्द होडे दही है। क्षे क्रिने से प्रतिदश्का सुरियो नुष्यत की। क्षी अञ्चल पान विकास उन्नवा है बताली।। सारे क्यो। सुरा बरधा काज जेते बन्ते हैं! बदा होडा है व सब ६७को स्टाव हुई दिहा सा ।। रो रो हो है बिक्ष अपने बार को है दिलते । रा विसंघ कर विवृद्धिया नहीं यह माने १ बेते नुधे साथ बनिया आहे को घोरिकाई है बेसे नुवे हुद्द्याय के केंद्र से कारणात्रे त क्षांच्या बहुर दुर्द्या ब्रेस ब्रंग स्ट्रा । बेले जुरु देवव अन्ति रुविध्य बादकरा १ इ बैसे इन्हा विविध दिया बन्ने दल देखि प्रथ है बन को से दशा दिया। मुस्कानुस्थ को हैं गा बेंभे बाढ पर्वष्ट पाढ से १३ सुद्राप्त सुद्रेष्ट करम्बाहरकष्टार क्यांद्रि पुरस्कातः ।









FPIREN IN AR IR PPIRER ER IDIE SPECIAL BARA-SER SERVICE મુકામા

र्के स्टिक्ट क्या कि क्या के अनुकार के

, माप्र-इमि पत्र की कि देश है एक द्राव्य द्राव

, क्रें हरव क्षा है, वाप सारी किटा है,

हिर मम खुत्र कोई वास भुर बुका है।

वंत्र क्षण भर में ही क्या गया हाव ज्यारा है।

१ डे कि मिन क्रिक्टी *क्रिक्ट* छाउन हुड़

lliga ins So ia iben ag ab

धन संवय वहा सा देवाल त्यादा कही है है

28

-- ووطيع في

प्रमुक्ति कि रिका की मीत दीवा ।

यस स्थव स्थ्य हो हो हो हो सा हो सा हो हो हो

। कुछ हरू में छन्। में दिशह एक उत्री

याधानीय बच यात्र वेश ही था दिया है।

थव सीन्द्र दीवानी को बया रहा है खहारा है।।

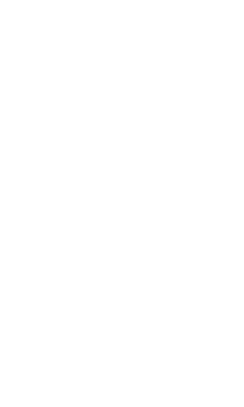
ul a the tim-will the et i & i ii

वर सवत्वीत का वार त्याव करा है।

agya darag











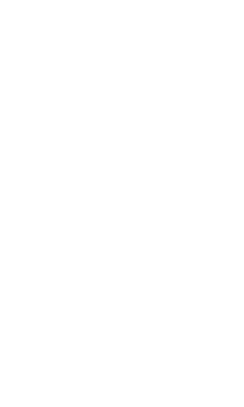


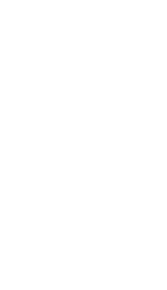
























### चन्द्रिका

देशकुन्यस्त निश्चित्रं से विधि यूणिमा पते, हैती उराहु मन में सब प्रशियों प વૈદ્યાં, શુધાંશ નિરળે વિષ્યાસા ૧૮૧ ઈ. लंबार में अबर अक्षुत भारत का । े दें किया मा अध्यक्षक स्था प्रकार क्या मन्त्रमादन अदा सुमने पर है takut ba ur yin ti mite E Hight effectes where til elle airen ell u.eu wure erting with 21 4 with bidd What has the to the time the sisal Rus Rend 1955 tette E and land when a marine atti if nel bear from of or a el francis a direct for es ance Ecology and and the second with me with a war dent, at E last per wer' be a rest win. Chickey Care Green with the e while a star younge ward a State come with me of

Bert for a list was not all

द व्यक्त व्यवस्थ स्वयं स्थाप है। स्वामीसीस स्वयं स्वयं स्वयं स्वयःस्वयं सीस से वर्ष्यस्य हेण सामीसाम स्वयं स्वयं

volteen gegreener gen erst freib.

1 de gen une eine une feg.

2 dean uffen ing fen it grift grift grift fing beite freibe in fen in fe

दीवी वयासम्ब उत्तराव मा चेत्रारा ॥

ofis Printera

## ifip]P

स्ति कर ही है सार बहा मीला कर बहित। वार की प्राथम कर कर कर करा बहा मीला प्राप्त कर कर किया है से बहुत। से की मान कर कर कर बहुत। से की मान कर कर बहुत।













तिरि-संकट में जोवन सोता मन मारे चुप बहुता था !

कल कल नाद नहीं था उसमें,मन को बात न कहुता था :

इसे जाहकी सा आदर दे किसने मेंट चड़ाया है !

अंचल से सस्तेह बवाकर छोटा दोप जलाया है ॥

जला करेगा वस्त्रस्यल पर यहा करेगा लहरी में ।

नाचेंगी अनुरक्त बोचियां रंजित प्रभा सुनहरी में ।

बट-तह की छाया किर उसका पैर चूमने जावेगी ;

सुन बगों की स्तृति नीरव कल्यत्व से गान सुनावेगी ।

देख नम्न कीन्द्रप्ये महति का, निर्जन में अनुरागी हो—

निज्ञ मकाग्र डोल्ग्यं महति का, विज्ञन में अनुरागी हो —

निज्ञ मकाग्र डोल्ग्यं महति का होकर यह संकेत बताने की ।

जला करेगा दीप, चड़ेगा यह सोता यह जाने को ॥

— वपरंहर प्रसार

#### रमशान

सैंस्व-रूप्या एक तुम्हारे पास है,

दिन्य देव-सरि पात्र एक जलपान का। नर्धनास तक जन्धेरेमें वास है,

रन्दु-करों से दोपक पाते दान का। एकमात्र आहार तुन्हारा वास है,

सम्बर है प्राचीन एक साकारा हो। सुनता है मैं बन्त-दीन तब बायु है,

सृत्यु प्रिया विख्यात पुत्र है नाम हो!







### चित्रवन

## ( चित्रक्ट का )

हे सीत्दर्शातार! रूपवनि! सुखमासार मनोहारो! हे उपवन की बतुलितशोमा! हे संजीवस्ववित्तुधारी! दिव्यदृतियो । भन्यभृतियो ! विधिविवित्रकृति । चपडाओ । विचरणशोलाक्षमलपंखुरियो ! ब्रे मपुरुलियो ! बहलाओ ॥ बड़ो प्रज्ञापतिषित्रप्योलिमो ! बहुविधरंत्रित फलिकामो ! हे संस्विमोहिनिमालाओ ! सुमनविहारिणो रसिकाओ ! हे द्रवगामो मानसगिवयो! हे परिवर्चनशोलामो! है ज्ञणमंगुरमंग्रहश्वनियो। हे सस्यायीलीलाको !! फुर्लों में पेंखुरी, पर्वों में तुम पची बन जातो हो। इस विधि-रिपुर्व बाज बवाकर नित पराग छितराती हो ॥ तुन फूटों पर बिठ जातो वे हदय चीर बिउठाते हैं। देखं इन विवरों फुर्लों में फीन अधिक बढ जाते हैं॥ विरुपावलो फड़ी फूडो है स्वापुञ्च मंत्रुन छाये। वातायन-युत-कुञ्ब-मनोहर कहीं देखने में नाये॥ गुष्टित्रत मृङ्ग इसित पुर्धो पर रख छेने को नाते हैं। कुआ न प्यासों के घर आता प्यासे उस तक 'जाते हैं ॥ फालित फलाव फलाव तानकर नर्तक बना कलावी है। मेघ मृदङ्ग गंभीर-गर्जना न्योमस्तल में न्यापो है॥ सौदामिनो मंजु मुरखो भी फभी फर्मा सुन पाते हैं। मंगलवार मोरनो गावीं दत्सव जीव मनावे हैं। मेवक है या नील-गगन में इन्द्र-चाप के वारे हैं। या है सुमन विचित्र वित्र या बहु रंगी विवि प्यारे हैं॥







यधरि बटु हैं वज्रहारों हैं फल मोठा देनेवाले। रोकर भी औरों के दुख को ये ही हर टेनेवाडे ॥ पोतस्तवक पोतमप्पि मानो हरित शिङा पर फैलाये। घटा अंधेरी देख इन्हें ये दानवोर छेने आये॥ बापस में जब फूट हुई तो काँव-काँव करते भागे। निस्य क्रकव पर्चोसे हर फर जन्य द्विजों ने ये त्याने॥ दो सइकार सहादर मानी या दोशों सहकारी है। वचपत्र के साधी दोनों है सम्बो सुद्रा पसारी है।। मानो मिछे बहुत दिन पीछे गादार्शिंगन खरते हैं। बहरव मिल वे बातबीत से प्रधिकों के मन हरते हैं ॥ बिर संबित फल लुटा चुके दें महा धौन पैसा दानी। वार्षिक यञ्च स्थिम करते हैं देवल पेय पवन पानी ॥ कोवल बेंद्रे हुई झल पर किलको महिमा पाती है। गये हुए उन सफल दिनों की किर से याद दिलातों है।। पिक नपनी काकडो चुनाकर मोद् रही सारे प्रायो। हाँ, रसाठ के सरस फर्जों से हुई मधुर वेरी बामी॥ रोप स्वर्गे को मुळ गई क्या पंचम स्वर जो वयनाया। कुद्ध कुद्ध क्या कहतो है कह जा तेरे ओ में जाया ॥

—विद्यभूषय 'विसु'





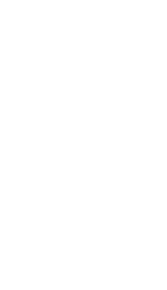
्रव्यवस्ती दे "एक चीर" की माँग पुर्द बाजी पर। वेश-निकाला स्त्रर्ग पनेगा, तेरी नाराज़ी पर! स्रोक्षमयी मनुदार-

कित घड़ियों में तुम्हको भाँका तुसे भाँकना पाप हुमा ! आत द्यो परदान निर्मोदा सुरू पर आकर शाप हुमा ! आंव हुर्र, नम से भूमंदल तक का न्यापक गाप हुआ ! अगणित पार समाकर भी छोटा हूं-पद सन्ताप हुमा ! अरे बरीप ! 'रोप' की गोदी तेरा पने विछीना सा । आ, मेरे आराध्य ! जिला हुं में भी तुष्टे विछीना सा ।

—''एक भारतीय भारमा''

### **उद्गार**

मेरे जीवन की लघु तरणी! जाँवों के पानी में तरजा ॥
मेरे उर का छिपा पाजाना, अउङ्कार का भाव पुराना,
बना बाज तुमुक्षे दिवाना, तत स्वेद-पूर्वों के ढर आ ॥ १ ॥
मेरे नयनों की चिर बादाा, बेम-पूर्ण कीन्द्रस्य-पिदासा,
मत कर नाहक और तमाद्राा, बा मेरी बार्तों में भर जा ॥ २ ॥
मृदुलमनोरथ-तक में फूला, कुल म्ङ्ग में अपने भूला,
भूल चूका यस जो कुछ भूला, बब नयनो छाली से भरजा ॥३॥
भूतो हृद्य में चिता कराला, जयर नम तक उठतो ज्वाला,
मरण-दुःख! के मुकामाला, गिरकर अब उसमें तू मर जा ॥४॥
पे मेरे प्राणों के प्यारे! सन अधीर बाँवों के तारे!
पद्मत हुना मत अधिक सतारे! वार्ते कुछ भी तो अब करजा।



मछली, महली स्विना पानी १ जरा बता हो साज, देखुँ क्तिने गहरे में है नेरा अर्थ जहाज। मन को मछड़ी हक्को खाकर कह दो कितना उठ है, चितने नीचे, कितने गहरे, चहाँ याद का यछ है ? वंदिन घट, सुनीठ बठ,हिङ-निङ, हुए सहाँ है एक ! महाडी महाडी मुझे बता दी, पहाँ थाइ की रेख ।। क्दं बार वड से टक्शपा, किर भी पवा न पाया. ज्यों हो पैडा, त्यों हो उकता कर फिर से उडराया। द्रह-निधि के उठीवने की टएकाये बिन्दु अनेक, हिन्दु टिटिइरी का घोरत छूटा, स्थाह बल देखा अब तुमले कहता है। मुक्तको जरा बता दो मौत। कितने मंचे वड को मृनि सिनिटवी है संबीर्प ! वरठ वर्षे दद भावो है होता है हैरान, ये बरवो हहरें विचित्र करवो टरका मैदान। दहाँ, वहाँ सर्वत्र आप हो जाप उट्या का सार, न्दोर्चित हो जाता है मन जीवनतट पर प्रतिपार। हैते यह दठ का प्टावक विष्ठव होवेगा ग्रान्त ! मन को मछड़ो, क्यों हृदय कैसे होगा विधान्त ! तुन्हें इसने हो में स्या हुख मित्रता है उठ-दोच ? माने में लंकोब किया करते हो क्यों पट-होब? नेत वह यह यह हो खा है, न हरी कुछ होब, भाषनाश का अर्थ हो गया है जेवन का छोता।



(२) क्षेरितिधि की यी सुप्ततरंग, सरक्ता का न्यारा निर्करः हमारा यह सोने का स्वय्न, त्रेम को चमकीलो आकरः। युद्ध बो या निमेष गगन, सुन्नम मेरा संगी जीवन ॥

बहसित वा दिसने चुपवाप, सुना छरके सम्मोद सान । दिवाकर माया का साम्राज्य, दना ताला दसको प्रवान । मोद-मदिस का बास्थासन, दिया दर्चो है भोजे बीयन । (४)

तुन्दें दुदराता है नेराह्य, हैंसा जाती है तुमको साधा। नवाता है तुमको संसार, हुमाता है तुम्या का दास।

मानते दिए को संजीवन, मुन्य, मेरे भूछे जीवन ॥ (५) न रहता मोर्से का आह्यान, नहीं रहता फूटों का राज।

न ४६०। माय का बाह्यान, नहा रहता फूटा का राज। कोक्टिंग होती बन्तरध्यान, वटा जाता प्यारा स्तुराज प बन्तमन हैं विरसम्बेटन, न भूडो हाण-भंगुर जीवन।

( 🗧 )

विद्यवते. मुरफाने को फूल, बदय होता छिपने को चन्द्र॥ शून्य होने को भरते मेघ, दोव बद्धता होने को भग्द, यहा किसका भगन्त यौवत । वरे झन्यर छोटे बीवत !

छड़रती आवी है दिन-रेन, उपात्त तेरी प्याली मीत। ज्योति होती आवो है होया, मोन होता आवा संगीत करो नपनों का उनमीलन, हाणिक है मंत्रवाले जोवन!



रो, इन्दा तू सरप पता है, क्या है यह सब साया है! या स्मृति है, अपया कविको कवित विस्मृति छाया है? —स्ताकट्रतेम 'नरसर'

तुम और मैं

(१) तुम तुङ्ग दिमाट्य स्टङ्ग, जोर में बंबड गति धुर-सरिता । तुम विमव दृदय-उच्हावाध,और में फान्त-फामिनी फविता ॥ तम प्रोम—और में शान्ति ।

तुम सुरापान धन-मन्धकार, में हु मतदाखी सांति॥ (२)

तुम दिनकर के धर-किरप्य-बार्ड, में सर्रावत को मुसकान। तुम वर्षों के बोर्ज विषोग, में हुं शिग्रती पर्रवान॥ तुम योग-स्वीर में सिद्धि।

तुन हो रागानुन निरस्स कर में शुविता सरस समृद्धि ॥

तुम मृत्रु मानसके भागे, और में भनोरंजिनो भागा। तुम नन्द्रन-यन-प्रन-दिरण, और में सुच-छोतड-तठ शाया। नम प्राच – और में काया

तुम शुद्ध सम्बिशनन्द ह्राय, मैं मनोमोदिनी जाया व

तुम प्रेममयो है। कडार, में वेमी काटनायिति। तुम का-स्त्रव-मंहत विज्ञारमें स्माइत विरह-रामिती 1 तुम प्या हो, में है रेसू।

दन हो राधा के मन-मोइनः में उन संबंधें को बेलु।







# विदा !

बाह्याओं के स्वप्न, क्षणिक जीवन के विषम विषाद विदा !
भावों के तुष-स्वर्ग, करूरना के सुन्दर प्राक्षाद विदा !
विदा 'कहें' की छडमय जाया ग्राह्मि-पूर्ण उन्मच 'ब्रह्मां हि !
इद्यारों के येग, महत्याकांक्षा के उन्माद विदा !
भाषा और ममत्व, बाहना के महवाछे राग विदा !
विदा-कुतुन के पागड करनेपांडे मधुर पराग विदा !
विदा-कुतुन के पागड करनेपांडे मधुर पराग विदा !
विदा पेदना और हदव को ध्यम क्या के उपलंदार ;
परिधि-रहित परिवाय, और उस मौन-प्यथा को आप विदा !
स्रोत्य नुच का उतायडों की है क्ष्मच उम्रांग विदा !
विदा भुकों के दिल्दन हागर को उपलुक्त उच्च उद्या ;
और बार के भाषण स्वर की प्यति-प्रविच्यति है स्मा विदा !

—भगदेतीचरच दर्मा





सोज साहुसो नहिं सापी मात, विता, सुतः नारो । सरने स्टाम जादने संगो और भावना मोरी॥ सलस्दायस सामि सुखर्से टेडु प्रोति जिप जोरी। नाहि तु किर परवार हरो स्टेज बात न पूत्रहिं कोरी॥

# वदास्त-पाठ

का कीन प्रताध-परोहिषि के उस पार पया जल-यान दिता। मिल प्राया, वयान, उदान रहे, धन में न धवान करतान दिसा ह कहिये प्रमुख प्रेय मिला किसकी, व्यक्तिकार व्यक्तिक प्रान दिता। कवि 'ग्रपूर्य' मुख्यिन हाथ कथा, व्यनकार करियेल कान दिता।।

पड़ पाउ प्रवाद प्रवाद-मेरे धारा जब उपन प्रवाद धरे। ध्य रोव प्रचादक ध्याव में मर देरक पाद ध्याद धरे र धन, धान विस्तर धराउन में धवशाद क्षेत्र्य समाव धरे। कोड पाड़ूर विजि महारप्यों, वह गुज सुरोध जन्मद परे।

वन्ता मोक पुत्रे यह थी, धींत के भागता सुधार पुत्रे। धर धरात नदानिधि मात्र करे,दर्द देश दुवन विचार कुछे। पुत्र तीरत मार मान्य करे धरधान पुत्रुमा विचार पुत्रे। भाग भागते करकिया माले वह सोविश मान्य सार पुत्रे।



## ञ्चानारणोद्य

## (१)

विधन-बिनासनदार ! अधन सन हेत प्रमञ्जन । परम रुचिर सरि चरित हृद्य विचरत मन रञ्जन ॥ छोछा जगम अपार सन्तज्ञ बस्तुन महँ दरसत । व्यापि रहा। सब माँदि यादिते सोमा सरसत ॥

## (२)

तुमडी सुमन सुगन्ध पाटिका तुमही मालो। तुमहीं तहबर सुकल तुमहि बालो हरियालो॥ तुमहीं सन्थ्या दिवस निसा नव तिनके फारन। तुमहीं राजत तेज तिमिर तुमहीं जगधारन॥

### ( )

हुस्टि हद्दां लिंग जार बड़ों लिंग वरित तिहारी । बान जगत यह फाड़, बीन यह नैन निहारी ॥ तुन्न परिवर्तन विश्व देरि छन छन प्रति प्टरह । बल प्रमुश तत्र निज्जन पे मनता बति घरह ॥

#### (8)

त्वय सरनागव नाय! बवन सारत उच्छारत। परिवर्तित जग माहि सातु सेवक पगु धारत ॥ तव चिन्तन मन माहि तिहारी सुद्रस बचनवर। तुम्हरी सेवा माहि करन मेरी रह वहनर॥







# ज्ञानारणोद्य

## (१)

पियन-दिनासनहार! अधन घन हेत प्रमञ्जन । परम रुचिर करि चरित हृद्य दिचरत मन रञ्जन ॥ क्षेष्टा जगम अपार सक्त अस्तुन महँ द्रस्तत । यापि रहाो सब मौडि याहित सोमा सरसत ॥

# ( २ )

तुमरी सुमन सुगन्ध पाटिका तुमरी माछी। तुमरी वहंतर सुक्तल तुमर्दि ढाळी दरियाळी॥ तुमरी सम्थ्या दिवस निसा लंद विनक्ते फारन। तुमरी राजत तेज विसिर तुमरी जगधारन॥

#### ( 3 )

हिष्ट रहां सिंग भार बहां सिंग चिति विहासे। बान बगत यह फाह, औन यह मैन निहासे॥ तुम परिवर्तन किय देरि छन छन मित करहा। बस मनुता तुत्र निद्वन में ममता स्रति घरहा॥

#### (8)

वर सरनागत नाथ ! बचन आरत बच्चारत । ९रिपर्विन जग माहि बाजु सेयक पगु धारत १ वर चिन्तन मन माहि विदारो सुत्रस बचनपर । देन्स्रो सेवा माहि धरम मेरी ग्रह हत्यर १



फूछ की कहानी

थो हिन खेळ गवा उपवनमें।

हर महोदा छेकर माया, येजा-कृश ईला-ईलाया ।

हिन्य-सुरमि से यन मंदकाया ॥ इससे पदकर भड़ा और क्या रक्डा है जीवन में ॥१॥

गुप-डोंदर्य देवबर व्यास, रोक गया माळे इत्यास । बीर विद्या जालो से न्यास॥

बार निर्धा देखा से न्यारा ॥ तोड़ छे चडा दुस्ट बेचने ह्या न बाई मन में ! ॥२॥ क्रीवत सब ने सीस सहाया, सुत हो जाने पर हुस्साया।

धर से बहुत दूर फिल्लामा॥ द्यमो रही दुनिया सहैव-सी सपने सन के धन से।

हमी रही दुनिया सर्वेव-सी अपने मन के धन में। ही दिन खेंच गया उपतन में ॥३॥

। इत म ॥ इ॥ — ददरीनाथ भा

सञ्जा का स्वभाव रितंपर बनले को स्वच्छ देता मुहास।

श्री हम्मृद गर्मो को स्मार् देश सुरास ।
श्री हम्मृद गर्मो को स्मार् ता विकास ॥
यह द दरखते दे भृति से मानु-भाग ।
गुत्रन दिन करे ही साथते कार्य साम ॥
विकास ति करे ही साथते कार्य साम ॥
विकास ति सुरा से देश के पुत्र भागा ॥
विकास तुम्ला कर्यो होन कुलो कर्यो कर्यो ।
सहस प्रकार हो दे द्वार स्वारी का ।
स्वार-श्री को है द्वार स्वारी का ।
स्वार-श्री को है द्वार स्वारी का ।



## फूछ की 'कहानी

दो दिन खेळ गया वयपनमें।

ह्वय सनोधा डेकर साथा, सेळा-कृदा हॅला-हॅलाया।

दिव्य-सुर्गम से वन मंदकाया॥

इससे यदकर मळा और स्था रक्जा है जीवन में ॥१॥

गुण-होंदर्व देवकर प्यारा, रोफ गया माळो हत्यास।

बोर क्रिया डालो से न्यारा॥

तोढ़ के चळा हुस्ट येवने द्या न साई मन में! ॥२॥

जीवित सब ने सीस चढ़ाया, सृत हो जाने पर हुकराया।

धर से यहुत दूर फिल्हाया॥

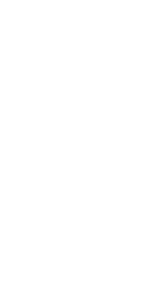
लगो सने दुनिया सरीव-सी स्थाने एक है पह में ।

लगी रही दुनिया सदैय-सी अपने मन के धन में। दी दिन खेल गया उपवन में ॥३॥

\_वदरीनाथ **भ**ट

### सञ्जनों का स्वभाव

सिक्षना की स्वमान दिनवर कमटों को स्वच्छ देता सुदास । शशि कुमुद गणों को रस्य देता विकास ॥ बहद वरसते हैं भूमि में नम्बु-धारा । सुजन बिन कहे ही साधते कार्य सारा ॥ विकल जति सुधा से देख के पुत्र प्यारा । बनि-हदय से हैं छूटती दुग्धवारा ॥ एसकर कुदसा वर्षों दोन दुः थी जनों की । सहज वक्षट होतो हैं दया सज्जनों को ॥ हदर-रहित होता हैं पयोधि-प्रशांत ।



कहीं रात्य से स्यामल खेत खड़े, डिन्हें देख घरा का भी मान घरा । कही कोसों उजाड़ में माड़ पड़े,कहीं बाढ़ में कोई पहाड़ सटा। दहीं कुञ्चरता है वितान वने,सब फूटों का सौरम या सिमटा ॥ भारते भारते को कहीं भानकार, पृहार का हार विवित्र ही या। हरियाली निराली न माली लगा, फिर भी सब दङ्ग पवित्र ही था। खिरपोंका तरोवन था, सुरमी का उद्दोरर विद मी मित्र ही था। बस बान हो सात्विक सुन्दरता सुब संपति ग्रांतिका वित्र हो या ॥ क्हों कोठ किनारे बड़े बड़े प्राम, गृहस्य निवास बने हुए थे। खपरेटोर्ने पर् करेटों को वेड के, खूब तनाव तने हुए थे। बल शेवल बन्ने बढ़ी पर पाचर, पश्ची घरों में घने हुए थे। हद बोर स्वरेश, स्वजाति, समाज महाई के ठान उने हुद थे॥ रस मांति निहारते टोबसी ढीटा, प्रसन्त वे पशो फिरँ घर को। उन्हें देवते दूर ही से मुख बोल है, बन्दे चल बट बाहर हो। दुहराने, बिहाने, पिहाने से था, नवफाय उन्हें न घड़ो नर को। हुछ व्यान हो था न दब्दर स्टे,ह्हीं बाठ बढ़ा रहा है शर की ॥ दिन एक बढ़ा ही मनोहर था, छवि छाई बसन्त की फानन में। सब बोर प्रसन्तवा देख पड़ी, जड़-चेवन के वन में, मन में। निक्छे थे घ्योत-घ्योतो ब्ही, पड़े हुन्द में घून रहे वन में। पहुंचा वर्डा घासडे वास विकारी, शिकारको ठाक में निर्देन में ह ਤਰ ਜਿਵੰਧ ਜੇ ਤਰੀ ਧੇਣ ਕੇ ਧਾਰ, ਵਿਹਾ ਵਿਧਾ ਗਣਵੀ ਦੀਸ਼ਤ ਹੈ। वहां देख के अना के दाने पड़े, बड़े क्ये अस्ति हो थे एउ से। नहीं जानते थे कि पड़ी पर है, स्डॉ दुए मिड़ा पड़ा भूतत से। वस, फांस के बास के बन्धन में, कर देगा इटाट हमें बड से । अब बच्चे केंसे उस जाल में जा, तब वे घडड़ा उड़े दत्यन में। रतने में स्वृतरो आरं वहां दशा देख के व्याकुत हो सन में। कड़ने लगो हाय हुमा यह क्या! सुत मेरे इलाल हुए वन में। बर बाठ में बाहे मिलूं रतने सुब हो क्या रहा रस बेहत में 1



पर जो मन मोग के साथ हो योग के काम पवित्र किया करता। परिवार से प्यार मी पूर्ण रखे, पर-पोर परन्तु सदा हरता। निज्ञ मान न भूछ के,मापा न भूछ के, विग्न-स्पपा को नहीं दरता। स्ट्रस्य हुमा है स्ते-हैसले, यह सोच-संकोच बिना मरता॥ प्रिय पाउक! नाप दो विन्न हो हैं,फिर आपको म्मा उपदेश करें। ग्रिए पे रार वाने बहें स्थिप काल खड़ा हुआ है यह स्थान घरें। दशा मन्त्र को होनी स्पोत की ऐसी,परन्तुन आप जरा मो दरें।

तिज्ञ धर्म के इसे सदैव इसे, कुछ बिन्ह यहाँ पर छोड़ मरें ॥
——रूपनाराय्य पाँडेव
नक्छी फूछ
( माया के बाद और को उक्ति)

(मारा क प्रात आप का जाक)
मार्टिन, कैंसे हैं ये फूड?
प्रया ये मेरे स्वामी को मी होंगे रुवि-ज्युक्त है
होगी कैंसे वह फुटवारी, ग्रोमित कैंसी होगी कारी,
होगी वहीं विहास विक्रस्ट क्यों सुन्दर मध्युक !
कैंसी इनकी खुठवू देंखें, कह दो तो इनकी छू देंखें,
बचा करती हो—करते हैं हम पहने दाम वस्त्र !
बोळो हो, हो दाम यहामो, मपना सौदा दुन्हों खुकाचो,
'खोयन' संच्या है जो इन पर गयी समी मिर्ट भूट !
जब से मैंने देवा इनका, जोहन का पन देवा इनको,
क्या इतने सुन्दर स्यामी को होगे नहीं हुनून है
यह क्या ! नैक सुवास नहीं है-इस उग मैं विद्वास नहीं है,
हाय हाय ! यह क्या कर हो है-इस जग मैं विद्वास नहीं है,

– देशेप्रसद गुप्त



मंजन्यास्य हिंदिन्द्र हो हत्य संख्या पर्ड में पाइन हरहे इट-इटिया अन्य-मूचि यस पार्ड है। दिनंड विचार दिएई बचनों से भारवेशपन गुंबाई पा बल्हन कर बबेन देख को प्रतिमा पूच्य पुरार्जना । बाहिनहरट हा दर्न २५व हर दया-दरीस्य विवह या सहर्वता हा भोड दहाहर इस्तत्वा हो हर हूँया ह दन्धदर्य नारव-समाज को सेवा सटत करेंगा में। बहुरन वार्याद्यों देश के हम्दुब हरा घढ़ेया मैं ३ डोरन हाड बद बारों से मृष्टि हुक्छो बारेगा . पर दिव पर अपने में जेल अन कारन्य अगरेना है चंदमसंख्यां स्ट्रॉया, स्ट्रिय-छेल्स्साय **च**डापेगी। मेरे रार्ध-इर्य को गुरदा कवि-उद्यो ब रायेजो ३ बाइम्सन्य र बिर स्थित में बोर विरेड बन् ना में । र्घतका इसके बन्दर तह में रहर-शिगृह वर्त के 🎗 बन्धरूप बन्द रहतं या दिख्य शंति दवार्र याः हरहे बित विष्टान दर्भ में स्वादे-वर्ष हो साह'दा : हारा हेहनेन हेरा हित हुनि हमान है। हुन्य नहा । का इंद इदन हुँया स्त्रुक्त बन्याकार दश इत्तराय दुन्दुर मेडने बन्सा ने कीन्द्र बडी नियम विषयु तात्र शेषु या डोड या हुप्यत्य दक्की बहुदर महीते हैं हम सब साहु स्पेबर स्वित्रीक देव प्रहार दुरन्दर का भी दय स कमो व दिवसीय । रावत रात प्रदान कर को हुनको सदा उस हो इत स्वीत स्टाग रख रहित दुख सम्माहती ।



#### ( ? )

किया कमी न विवार साथ क्या वयने टाये ; होने क्या दे विदा—न समझे, पाप कमाये । सद्या त्याग न किया व्यर्थे ही वासर खोये ; यात्रो दने परन्तु राह में कोटे बोये । हा ! क्यांघन वयसीतिं हो, स्रोड़ चडे संसार में ; हम उत्तर देंने क्या भटा, दश्वर से दरबार में ?

( } )

बहर-बह्तदर भागु, न तब भी सुदृत फमाते; हाय हमारे भाग विगरते हो है जाते ! विपयों में फ्रॅंस रहे, न मन का मैठ सुदृति ; कर्याधम नित नये जाल द्रम में फ्रेंटाते । हम शुन्ति सच्चे ध्रुव ध्येय को प्राप्त न होना चाहते , तनु-तरणो को मब-सिन्धु में वृदा दुबोना चाहते ॥

–''ಫರ್ೆ

### पुस्तक-प्रेम में जो नया प्रस्य विद्योद्धता हो, भारता सुरी सो नव भिष्ठ सा है।

देख उसे में कित चार-बार, मानों किटा मित्र मुक्ते पुराता व "बदान, तब्ने पुस्तक-बेन माप, देना ममा हो यह राज्य सारा।" पढ़े मुक्ते यो यदि बक्जनों, 'रेसा न राजन सहिये" पहुं में त सम्बद्ध भण्डार मण हुया है, सुषयं सा जो मम गेड में हो। बकारव, हे मन मित्रस्था! स्वों सुं दिसी के सिर दान को में व



क्रमों के अनुसार हमें वह दुख देता है , वनके हो अनुक्कुल हमें यह सुख देता है । क्रिन्तु क्ष्में के बटिल क्रियों मध्य पड़े क्यों ! हिर की इच्छा-पृति-हेतु हम यहां छड़ें' क्यों ! नम-स्पर्श के टिये वहल रविश्वश्चितां जाना,

खा पवंत से चोट, उरुधि वटमें गिर बाना । फाम,कोध, मह, स्रोस बादि से पोड़ित होना,

चिंताओं का भार व्यर्ध कीवन-भर दोना। बन्य व्यक्ति के टिये कभो सोई न करेगा। अब टों उसले स्वार्ध खर्च उसकान सरेगा।

जप हा उसत स्वाय स्वय उसकान सर बोर, हमें फर विवश पडाता है यदि हमस्ते ।

निज दिनोर्डे हिये सताता है यहि हमको । बत्याचार-निदेव! उसे फिर रास्त कहिये!

परमिपता सह उसे स्मरण क्यों प्रस्ते रिहेंपे हैं स्वेच्छा बिना सहापि यहाँ हम ना न सके हैं।

बिता फिसी सोंदर्प्य कदावि लुना न सके हैं। मुक्तको पहता जान सुखों के पीछे किरना।

उनका पा बामास और दुःषों में गिरना। विधवाओं का रदन ! विकटकर कोई मरना।

माता का निजयुत्र के लिये कंदन करना। मित्र विरक्ष से मित्र-मण्डलो का दख पाना।

स्वेच्छा के अनुकुछ किया में अध्य बहाना ! स्वेच्छा के अनुकुछ किया में दे सारी ! रानसे बनवी सरस विरस जीवन को क्यारी



दिन ६८-अंत रात का बाता, पौदन का दुन्दलाता, पुटों का सहता,कटियों का सलमय हो पिर जाना। खपना का निधना हो जाना, हास की जगह धेना,

प्राती का प्र-विहोना हाकर सब सुख योना। स्वजों के वींरप्दे के दिय इसने स्वयं बनाया,

उनको निन्नादस्थाओं में सुख-दुख स्वाय बसाया । किर दुख का काधिका देख इस क्यों घररावें !

क्रों व रहेश को प्राप्ति के समय मोह मनावें! बही, द्वाय अब निष्ठे द्वाब करना ही बर्दिस हरते में होकर बराह ब्याहुत हो रहिर। उब अयोरता-घटा घरो किर घड्रादेगी,

श्मिनी दिखटावेपी। बन्धकार में मागे दब होया ब्हब्बल, दुख्य रक्ष दमो मिद्रेया.

वेंबेरन परवात् नाषुरो-हसुन धिडेया। डो विश्विचे! विस्टब्से मत्स्मम, स्थासे,

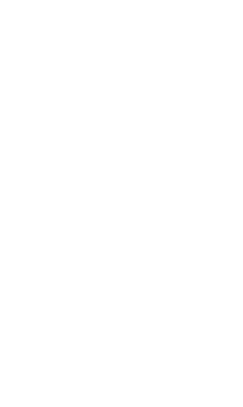
हेदर देने यह हरूव में मेरे नाये।

समय : क्यों संहार हमारे सह दिएवं का ! क्तो पूर्व अरहार हमारे सब वेमड का! वबहेवां का विश्व स्थापा में हमें ब्रह्माओं!

पूच रिक्षमह के किया में हमें रहा हो।

----







```
मृतक समान नराक विवस नौवों को मोचे;
                         <sub>गिरवा</sub> हुमा विलोक गर्म से हम को नीचे
              करके जिंदने छ्या हमें अवस्म क्रिया था;
                        छेक्त वरने बतुछ बङ्ग में <u>त्रा</u>ग किया या।
                       जो जननो का भी सर्वदा,
                            थो पालन करती रहो।
                      त् क्यों न हमारी पूज्य हो,
                           मात्भूमि मावा मही॥
        जिसको रज में टोट टोटकर यह<sup>े</sup> हुए,
                  घुटनों के यछ सरक सरक कर छड़े हुए हैं।
      परमहंत-सम बाइपसाछ में सब सुख पाये;
                बिसके कारण 'धूडमरे होरे' कहटाये।
                हम बंडे हुई हर्ष-युत,
                     जिलको प्यारी गोर में।
               है मातुम्नि ! तुन्त्रको निस्स्न,
                   मन्त क्यों न हों मोर में श
 पालन पोपण भौर जन्म का कारण त् ही;
           वसःस्थल पर हमें पर रही घारण ते हो।
<sup>लञ्जरूप प्राक्षाद</sup> और ये मइल हमारे,
          बने हुए हैं बड़ों! तुन्हों से तुन्ह पर सारे।
```

अन्यंत्र बाथ वर्ग रहा

the ing tre en alues it fige

twe fif g ig fen winter fam

) a dis part jes 28 274 A 23 A 213 A3 عديد فينا. سُهُ در هد سد حد د Lu ri is is a man man will 1 B 12 F Sept + 13 12 12 12 13 .. . n a bit at mit to bits

1 844 L 244 L

Dit Im bir iben

er petigen, bijana i in a grand and a g

dand whatel Land C

algul de quie igt & unne bhin,

दांच रहा द बहा रिंद संस शिक शिक राजा! ( 60 )

है संबन्ध ; सबाब स

face and free property, frames &

Buing & found C, chungt C, ( 12 ) ा कि क्षेत्र कार क्ष्मात

, कृ माळछा ! मीक्षुशंस ह

Bang-aig nini EB.

elt einsternes fi

हम मातृमुमि । देवठ तुन्हे,

शीश भुका सफते वही !

( { { } } )

कारण वश जब शोकदाह से हम दहते हैं,

तम तुम्ह पर हो लोट-लोटकर दुख सहते हैं। पाखंडों मो घूल चढ़ाकर तुनु में तेरी,

पालना मा पूळ चढ़ाकर वर्त म वरा, क्दलाते हैं साधु, नहीं लगतो है हैरी। इस तेरी हो शुचि घूलि में,

मातृभूमि! वह शक्ति है।

ओ क्रॉ के भी विच में,

उपजा सकती भक्ति है॥

( १४ ) कोई व्यक्ति विशेष नहीं तेरा वपना है,

को यह समने हाय ! देखता वह स्वना है। तुमको सारे जोव एक से हो प्यारे हैं

क्षमाँ के फल-मात्र यहाँ न्यारे व्यारे हैं। हे मातुर्माम ! तेरे निकट,

सब का सम सम्बन्ध है,

ज्ञा भेर मानता वह बही।

लोचनयुत भी अन्ध है।

(१५) जिस पृथियों में मिळे इमारे पूर्वज प्यारे.

उससे हे भगवान ! फमो हम रहें न त्यारे ! छोट छोट कर वहीं हृदय को शान्त करेंगे.

उसमें मिटते समय मृत्यु से नहीं हरेंगे।



बी उड़ो शुक्ते शुक्त-बाल सर्व, वे टंगे विवारने किर सगर्व। बा गये टोटकर बब विश्कु, सब गाते शुक्र-पश वैड-सङ्क। उप बल्म भूति-गोरव-निधान, जय क्य त्याग के मूर्तिमान। अप धर्म-परायच महाधीर, प्रचयीर अलौकिक अपति कोर॥

—गोविन्ददास

## प्यारा हिन्दुस्तान

मेर, द्रोप, हिमगिरि, विख्यावड, गंगा, उनुना, रूच्छ, मरस्यड, सागर, सरिवा, स्रोव समगठ,

करते चित्र बसान। हमारा प्यास हिन्दुस्तान व

दन, उपवन, फाउ फूठ मनोदर, वहित स्वा विश्वी तदवर पर, हरसिज वहित समोद सरोवर,

ष्टरे सद्दा सुबद्दान । हमारा प्यापा दिग्दुस्तान ॥ स्रप्ति, सुनि, बोर ब्रद्धो ब्रद्धाबारो, स्राप्तु, स्त्री समुद्र, सुस्रारो,

वायुः वकः वन् टः सुबारः, दिह्याः सुक्रवि, गुयोः नर-नारोः,

> सब का अन्तस्थान। इनारा प्यारा दिन्दुस्वान ॥



पड़े सड़ रहे हैं मनमारे, ख़ूब फर्स हैं बन्धन सारे। नहीं तिनक मो हिटने पाते हैं यह सपट-फटा-पटट्डको॥ सेवा तेरे परण-फमट को ॥ १॥

चन वर चरण-फनल का ॥ १॥
फोई हत-उत्साद रंक हैं, कोई निज्ञ ओदित सर्रांक हैं।
कोई वड़े प्रपंत-पंक में, छि: मानव-कुल के कलंक हैं।
कोई विद्रोही मर्पंक हैं, क्या कोई पैसे नर्रांक हैं।
करें विकट पल्हिन शान्ति से लघु लालता छोड़ प्रतिपल्को।
सेवा तेरे चरण कमल को॥ २॥

जिनके दर निर्भय निश्वल हैं, मन यब फर्म पफ निश्डल हैं।
पूर्ण वेजमय जर्मर तन पर केवल वस्फल यसन विमल है।।
लीर परम प्यारे निर्वल हैं, क्या उनके प्रयत्न निष्मल हैं है
होतो हैं न्योद्यावर उन पर,सहसा क्रांद्व-सिद्धि व्रिति-तल भी।
सेवा तेरे वरण कमल भी।। है।।

—"रक राष्ट्रीय झात्मा"

### स्वदेश-प्रेम (१)

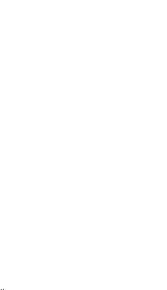
शीत कड़ाके की यो, करता या को को सारा कंसार। पाड़ा कटता या हाड़ों में मानों सुरयों को थी मार! ककरोड़े पथरोड़े पथ पर नङ्गे हो पानों था कौन! प्राणों को विल देता किस पर! सुना परन्तु सभी या मौन! हदय-देश उद्दोलित होकर स्वयं हो उटा शर्द 'स्वदंश ॥

जिस प्रकार संगात बाहिका बचनी हो पत-होता हो--इन्हों भी मुखाब बाबवर दुखिनों की, इस दोना की --सुन्दर बसानुबन-सञ्जित देख चक्तित हो जातो है। सव है या पेवल सरवा है, फहना है, हरू जानी है 1 पर सन्दर छगतो है, इच्छा यह होतो दे कर हो प्यार। व्यारे चर्चों पर पठि जाये, कर ठे मनमरहे मनुहार ब इच्छा प्रयष्ठ हुई, मता के पास दीइकर बावों है। वर्सो को संवारतो उससी मानुषण पदनातो है।। उद्यो मांति बारवर्ष मोद-मप बाज मुझे किन्द्रकाता है। तन में उमड़ा हुना नाव रस मुंद्रक वा हक जाता है 🛭 देसोस्सचा होस्टर वेरे पास दौड जाती हं में। तुके सवाने या संवारने में हो सुव पाती हैं में व वैरो रस महानवा में पया होगा मुद्रा सदाने का। वेरी मध्य मुर्ति हो नडहो अभूपच पर्ताने हा॥ किन्तु प्रया प्रया माता ! में भी तो हूं तेरी हो सन्तान । इसमें हो सरवीप मुझे हैं, इसमें हो जानन्द महाना। सक सी एक एक की पन नृ तोस कोटि सी आज हुई। हड महान समी, भाषाओं की तुही सिरताज हुई ॥ -मेरे लिय पढ़े गीरच की चीर गय को है यह बात। तेरं द्वारा हो होवेग। मारत में स्वातन्त्र-प्रभात ह अपने ब्रत पर मर मिट जाना यह जोवन वेस होगा। जगवी के पीरों-द्वारा शुन पद-बन्दन वेरा होता ॥



### अन्योक्ति-सप्तक

मैंना तू वन-वासनी, परी भी और जान, जान दैव-गठि-ठाड़ि में रहे शांत सुख मान। रहे शान्त सुख मान पान फोमल ते वपनी, सव पश्चित-सरदार तोडि फ वि-फोविद बानो। कहें 'मोर' कवि नित्य, योहती मधुरे वैना। बौ सी तुरुको धन्य, बनी त् लडह मैना ॥१॥ वीवा त् पडड़ा गया, यय या निष्ट नदान, बड़ा हुआ हुझ पड़ डिया ठी भी रहा बडान। ती भी रहा अञ्चल दान का मर्भ न पाया। जीवन पर के छाप स्रोंच निज घर विस्राया। दहें भीर' समुक्ताय शय! तुबर साँ होता। चेता हो नहिं जाप, किया यया पड के कीता हरत दिही निज पवि-पादिनी तुन्तको प्यास नेद, यातो है चिह्नका नमक, उन्नले नेज न नेद। उसके नेकान नेद्र देव पर फारनी हमछा, बा बाकर व' इं। कर्ना घर ६ फसता। बहै सार्थ समुरात, परे तु खहै दिल्ला। समक्त्रामी बाउन हो तुससे किस्तो ३ दगला रेडा ध्यान २ दान उलाहे तीह मारो तरफा त्य वरी मनका धस्म झरीह. मलकर सम्बर्धात कर यथ देखी मधली **बहै 'मीर' म**िन घोच समुखे कीरन निगठा



## जन्योक्ति-सप्तक्त

मैना त वन-वाहनी, परी धीं और बार, जान वैव-गति-ठाडि में रहे शांत सब मान। रहे शान्त सुख मान चान चीमठ ते धपनी, सब पश्चित-सरदार दोदि फ वि-कोविद बरनी। कहें 'मीर' कवि नित्य, कोटवी मधुरे बैना। बौ सी तकको धन्य, बगीत अग्रह मेना ॥(B तोता तु परझा गयाः जब था निषट महान, बदा हजा हुड पर डिया ठौ मी खा बडान । तौ भी उद्घायज्ञात ज्ञात का मर्भ त पाया। दोवन पर हे दाय सौंच निज्ञ घर दिसराया। **ब**हें नीर' सनुन्नाय दाय!तु अव टॉ छोटा। वेता हो नहिं जार, दिया परा पड है होता १२३ रिहो निज परि-पार्टिनी तुमसी प्यापा पेर्ट, पातो है दिहसा रमस, रहसे बेद व देर । ब्लाखे नेज न नेड देइ पर घरडी हमला, या पास्त वो दूध समाई घर की कमहा। < है और उत्तरम, पड़े तृ यहे हिओ। रमञ्ज्ञाती बाद न हुटे तुम्रछे (रुद्धी/१३) रगता रैठा ध्यात में पातः दल दे श्रीर. मार्गे तरही हर की महस्त सस्म हरीर। महदर सन्स सांद तीर दाव देखी महली **द**ई 'मोर' प्रति योग समुद्धी स्ट्रील विद्याः'



## **अ**व्यक्त प्रेम

कैसे सूर्य-स्तेष के प्यासे पंकायका उर उउटाक दीय। पाते ही बालोड विर्देख के बिख उठना है सब दुख धीय। फांव हाम्हिनो फारव फौमुरो। मिटवे ही भाइटा खावो। हागुर-यांपर के विकास पर विक्षसित हो सुख सरसातो ॥ होत्उन्ने सुगंप परन दा प्रत समय पादर संधार। देखरी थाली, सुमन सुरूलित कर देवा है खुर्गीय-दिस्तार ॥ धनधीयन वियवमा खदव में हुग-पाशस को मारे धीर। भार प्रभाव ग्लापे भाव हाथन प्रदेश केन की और 🏾 द्व शहरू के सर्थन सुन के रिक, इन्द्रद, न.चे यह मोट। बद्याच वर्ष विद्याति, उते उपा दे हटनी छीर । स्वर र्याम श्रीतुरी बदात्रा, बम्स्य कुरों दे दिय दाता । संबुद्ध हो काशा है क्युद्धित है कैहर्तिक तुख पाता ध इंदर्भ कर में महोतुत्व हो, होता है। बर्चे मस्म दर्ज । ब्योग को १ वह हो से पूँछ रव अल्ड देव का दव ह भाव देन्य स्थापंत्र विराहर विष्याद्वत हो पान्य-विश्व । वस बतरका यही रहा है हत्यप स्टान हाथे उचा।

दर्श दिया सदस्य द्वाहरू व्यवाद्वित स्वाक्ष है त्रम्यू वास दे द्वाद्वापृति यह द्वाद्वाम सद्या हिस्स है व्याद्वादत्य दश्यो हुन्दे को दर्भ द्वाद को दिस्स-पुरस्य वारो दिस्सन्य द्वादिकों है होता है व व्याद्वा सुद सारम सम्मीत सम्मात विवादन वादम वाद व्याद्वा स्वद्या वाद्या द्वादी हिंद होता है हो दस्य महिद्या



जिनकी मृदु मुचकानि सरक्ता विकसित गार्थों को लालो।
देख देख सुन्दर पूर्वों को रचता है जग का मालो।
वधी हुई मिट्टो को जिनने कव तक नहीं पकारा है।
जिनको हार्यों से पैरों का विक्र अंगुठा प्यारा है।
आवी भारत-गौरव-गढ़ को सुदृढ़ नींव के जो पत्यर।
आवैदेश को अटक इमारत का कनना जिन पर निमर।।
उन्हों अनुठे कार्नों को यह मेरो स्वरमय कारत-पुकार।
पहुंचे आगळता की जड़ में दिसमें होय शकि-संवार।।

—नादव शुक्ट

## उन्माद्

वय नहीं जाकर किया तुमने हर्य में वात , हो संघोर स्वयं बढ़ा वय यह तुम्हारे पात । पर न तुम्हको पा क्रका को यहिप बहुत वडार, होट साथा अन्त में होकर सरीय हताय ॥

રે

हॉप्टमोचर हो न तुम पहन तमी मितनान , हत्य दम मी पयों न किर यह यात देते मान ! ट्यावनी को मूंश्वर फरने टम हम व्यास्त्र ; हाय, तो भी कुछ हमें न हुआ तुम्हाय उत्तर ; ( > ) वित्त देखर और तुन को यक दिन को बात

खित देवर सार सुन को एक दिन को ग्रह स्रो महे थे हम पढ़े चौटो बहुट को टन



```
::
             विविध विषय ]
           जिनको मुद्र मुलकानि  सरङ्या विक्षित गार्खे को स
           देख देख सुन्दर पूटों को खबाई जगका मार
          पधो हुई निट्टों को जिनने जब तक नहीं पतारा
         जिनको हावों से देतें सा विश्वित्रंग्टा प्यारा है
         माओं मास्त-गौरव-गड़ की सुट्टड़ मॉर के जो परधर
        आर्थरेस की बटल स्नास्त का क्वना जिन पर निन्तर।
       उन्हीं जन्हें कार्तों को यह नेरो स्वरमय वहत-पुरार।
       पहुंचे आराच्या की बड़ में दिसमें होय राजि-संबार ॥
                                           —हत्त्व हुनद
                          उन्माङ्
           वर नहीं जासर सिवा तुमने हरूव में वास ,
                         ( ? )
          ही नद्यार स्वयं बढा वर वह दुःस्टारे पःव।
         पर न तुन्हरों या बजा को पर्नि बहुत हहार,
         होट काया जल्ब में होंबर नवीब दवाय उ
       होस्तोवर हो न तुम स्ट्रंड समी मंजिमान ,
       हत्य इन नी क्यों न दिर यह बात देवे नान !
      ट वर्न को मुद्दिर क्यने हमें इस व्यान.
     हिया ना भा कुछ हमें न हुआ दिखास केत ु
     वित्त इंबर और तुर के यह दिन की राव,
```

ल रहे थे हम एवं क्षेत्री कर क



```
दिन्द्य दिएय ]
                हैंब हर एड बर एवं इन बड़ गुड़ न्युल,
               हार ! हो भी वित में ब हुवा दुरासा भाव ह
              पर्व बर वह है हो दुवने की एउना ,
             हिन्तु द्वन बहुत बहुत ही है रही कहुत्त्व।
             वह बहिन इ.वा च्हा न विक्रीन्तुः व बहन ,
            है हमें दान की बद हो हहाई खनत!
                                   त्यम ्
   बाउद हे हन्ति वर्षे स्टब्ब वर्षेत्र लवे बाबुस्व:
   बन हो सब बनिस्व दिया हा चरता है रह सब उन्हां ह
  बळे दो व्य बचे बजि बाबाने स्टिश गनस्ता !
 विक्टतीं में बाज उपन पर एकी हैं किन कोर बक्ता!
हिन कर्ने के देखि उत्पादन निर्देश हिल्होंने के हंग
हें जा के कि से हैं दिन करते हो हैं कि के
ही करक परकों है मंहर दिस एक का सुवन्तांदित ?
दे हे उस बहुतित वर दे वह क्या करने हो है थी.
कार्ट है विस स्ट है देशकारेट ख करता
```

। अरक राज्याना बादय-सा वर्षय रहा है कर बरार । नयर-मेरिसम के क्यु-तम में यह किस सुप्रमा का संशार १ अधि-एक म्हम्

( 5 ) ा नाप किया हुए एक किडीक कि भूप करती पान । भारत र हाया है वह से वह से में हैं है है सिंहिन समी । गाग्र हा मूर्य स्था है स्थित बुच्यों स्था हा स्था वस्ता । मिल ! सुरु-वस्त्र हे व्यास है किय स्वित्ववर्षित है। (8)

क्ष्म व मोगर निय, द्वानमञ्ज का नियम ( 1 ) l neg jun fin fern forga fob L eele-epe ,गाव के क्षित्र मुत्रा सक श्रीतान हिन्द्र में के विश्व के भार के कि कि । हार हीए कि किछि-काल स्ट्रीरीय हिस्स्य है एक पछ ,होस्ट फिड़ी के बीट हती वर किए होस्ट क्रिक्स कि घरान

। माग उच्चार छाई हैदि है किए छ कामी महियी ज्या स्टार नाने जान सा स्टा है अधिका ने स्थान त्राज, ब्ली क्या छोता हो वर क्रियम है स्थानाता मोत्र हुन ने जिस दुशाओं एस विस्तव का संसाद ( ) मन्देरी तुव, तुब, स्न्जार्व, मांगे हा शहि का साजेय।

l wisepuppy gen gente in fepe 85ife dafil azu Gangri fing da & gen affre!

laugy imialan: mia frim ante fa tile an (2)

(राज्ञ द्वार्थ के राज्य है। इस्ता के राज्य है।

नडियाला चे.सुन वर सहसा-'जग है देवत सड-वटार' व्यक्ति कर देती मास्त को वह सपने सीरन स्वास्तर! (६)

हिम-बल वन तारफ-पटचों थे. उनड़ मेक्सि वे ब्यद्त, सुमनों के सम्बद्धे हुनों में स्वप्त लुख़्दे हैं में दर, उन्हें तहन प्रज्ञत में चुन-चुन गूंघ या हिस्से में हर, बदा बपने उर के विस्तय का तुने कर्ना किया शहूर? (१०)

विज्ञत-तोड़ में चौक जवानक, विश्वपन्तिका पुरस्कित्य, जित सुवर्ग-त्वप्नों को गांधा गा गांकर कर्ता है क्यू सर्जात ! कभी क्या सोवा तुने वदनों के वस में जुनका, होर-शहस दोवों को चमका करते हैं हो मैताला,

## जांस् !

हे मेरी बांबों के बांब! है इस बोबन के दिहात ! एडक पड़ो मड़, रहो जनत तक, उमहे इस दुविनाहे हन् है कहण। के बिड़! जड़ो जिमहापा को तरेल करू मड़ एडका है हंगी हुई तुम पर ही मेरी गुम हरू हर्य-वेर्ना के परिवायक! निरावार के है जावार! अन्तस्तर को घोनेवाते! है मेरे सुमुख रहुगर, हे मेरी जनतंत्र्य मूटों के—मूर्तिमान बच्चे करू श्रीवट करते रही हरा इस राय हरूप का नीरपर, wirdt fara eiskyjp... क्षेत्र इस रह होयन कोता, वही जिनव है बाराबार प्र lyp fingkapl biggl is tipp was this ।। कि क्ये हैं हें इसकों में सरकारी कर कम करफ कि lips fal g ine fin fa kp jiere hu i ho bied f jine bine forter fen nemprene l fir bal į ima kila fir on krife vo ši š । किस्ट एसी में किएन में, एं क्यानात के ठाकाण्ड बार-बार रेस ग्रेस्स जेत बड़े सर्वा हो । इंबरासा र क्या है प्रस्तित में मको, तुममें हुम, मधे हत्ताल्य ह ब से हेड़े जिस्सी सहसा वह-बना रहे संबद्धातम राज्य । अल बाब से वो सब कुकरो, बर आवेगा रित्र विश्वास्था । छात्र देश हो स्टब्स्ट स्टब्स्ट स्टब्स्ट होत्त होत्त होते । इस्तु स्टब्स्ट स्टब्स्ट स्टब्स्ट स्टब्स्ट स्टब्स्ट स्टब्स्ट वया जाने क्या, कुर्व एक्टबरा, देव बहेता भुरत क्या जा व

Erm to folk this ! Bigg to lerest febal \$







